चन्दामामा

जुलाई

For the first time in India the revolutionary electronic engraving machine in action

VARIO KLISCHO GRAPH

WHAT IT MEANS TO YOU

Block making time reduced from days to a few hours • Electronic control of gradation and detail sharpness • Electronic adjustment of colour correction

CHANDAMAMA PRESS - CHANDAMAMA BUILDINGS - MADRAS-26

चन्दामामा

जुलाई १९५५

गेवर्ट

गेवाबॉक्स ही लीजिये—

इसमें हाई स्पीड शटर होने के कारण
तस्वीर, **पलक झपकते ही** उतर आती है।

गेवर्ट

गेवाबॉक्स

मुन्नू बदल गया

प्लास्टिकले

Introducing

'Kashmir'

New

Teeth Cleaning Unit

'Kashmir'

TOOTH PASTE
TOOTH POWDER
and
TOOTH BRUSH

by

THE NATIONAL TRADING CO.

KASHMIR SNOW BEAUTY AIDS

दिलीप और उसके साथी
सांप और सीढ़ियां खेलने लगे
फ्यूज़

FOR PRECISION IN...
Colour
Printing
By Letterpress...

चन्दामामा

संपादक : चक्रपाणी

हमारे देश में बहुत-से पुराण हैं और वे कई दृष्टियों से रोचक भी हैं। वे प्राचीन हैं। बहुत प्रचलित हैं। हम "चन्दामामा" में कई का कथासार दे भी चुके हैं।

किन्तु अब हम एक नये प्रकार का पुराण दे रहे हैं। यह पुराण जंगल के जानवरों के बारे में है। इसे हम "अरण्य पुराण" कह रहे हैं।

यह इस अंक में उसका प्रथम भाग है। जानवर और जानवरों की कहानियाँ बच्चों को विशेषतः प्रिय होती हैं। "अरण्य पुराण" आपको अवश्य भायेगा।

वर्ष : १७ जुलाई १९६६ अंक : ११

भारत का इतिहास

शिवाजी के बाद, उनका बड़ा लड़का शम्भूजी (शम्भाजी) गद्दी पर आया। वह विलासी था, पर बड़ा वीर भी था। कविकुलेश नाम का उत्तरदेश का ब्राह्मण उसका मुख्य सलाहकार था। शम्भूजी के शासन में महाराष्ट्र राज्य कमजोर तो हो गया था, पर शिथिल न हुआ था। शम्भूजी मुगलों के तरीके के बारे में अच्छी तरह जानता था।

दक्खिन में औरंगज़ेब जो बड़ी सेना लाया था, उसका उसने अच्छी तरह मुकाबला किया। परन्तु ११ फरवरी १६८९ में रत्नगिरि से २२ मील की दूरी पर, संगमेश्वर के पास वह मुकर्रबखान के हाथों में फँस गया। उसी समय कविकुलेश और पचीस मुख्य साथी भी पकड़े गये। मुगलों ने जल्दी ही कई मराठा किले जीत लिए। मराठाओं की राजधानी रायगढ़ भी ले ली।

परन्तु शम्भूजी का भाई राजाराम, सन्यासी वेष धारण करके रायगढ़ से भागकर बहुत-सी मुसीबतें झेलकर आखिर कर्नाटक प्रान्त के जिन्जी में पहुँचा।

इस बीच मराठाओं की राजधानी मुगलों के कब्जे में आ गई थी। शम्भाजी का परिवार, जिसमें उनका [illegible] का लड़का साहू भी था, मुगलों द्वारा पकड़ लिया गया। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे मराठा साम्राज्य खतम खतम कर दिया गया हो।

पर....जिनका संगठन शिवाजी ने किया था, वे मराठे इतनी आसानी से झुकनेवाले न थे। वे फिर मुगलों से अपनी मुक्ति के लिए युद्ध करने लगे। इस युद्ध में, अन्त में

इसके बाद बादशाह स्वयं मराठाओं के किलों को एक एक करके कब्ज़े में करने लगा। पर उसका प्रयत्न व्यर्थ ही रहा, क्योंकि आज जो किला हाथ आता, कल वह हाथ से निकल जाता और लड़ाई हमेशा जारी रहती।

राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी ताराबाई मराठाओं की सरदारनी बनी। उसने अपने लड़के शिवाजी तृतीय की ओर से राज्य करते हुए असाधारण बुद्धिमत्ता दिखाई। जब उसका पति जीवित था, तभी शासन की कार्यकुशलता के लिए उसको काफ़ी प्रसिद्धि मिली थी। उसने मुग़लों के शासन में भिलसा, खानदेश आदि के सूबों को लूटने के लिए बहुत-से हमले करवाये। मराठाओं ने १७०३ में बिरार पर, १७०६ में गुजरात पर आक्रमण करके कोहराम सा मचा। १७०६ में, अप्रैल और मई के महीनों में एक बड़ी मराठाओं की सेना ने अहमदनगर के सुल्तान की छावनी पर हमला किया। उसका मुकाबला करना, मुग़लों के लिए बड़ा मुश्किल हो गया।

इस बीच मराठाओं ने अपनी सेना का अच्छी तरह संगठन किया और दक्खिन में और मध्य भारत में उन्होंने कुछ प्रान्त पर निर्विरोध शासन कर लिया। उन्होंने मुग़ल सेनापतियों को पूरी तरह दबा दिया। युद्धकला में भी वे बहुत चतुर हो गये। उन्हें मुग़लों से बिलकुल डर न था। वे सब जगह इस तरह जाते जैसे जग उन्हीं का हो। उनके दमन के लिए औरंगज़ेब ने जो कुछ प्रयत्न किये वे व्यर्थ गये।

नेहरू की कथा

[२४]

इस परिस्थिति में स्वराज्य पार्टी का कार्य भार मोतीलाल जी को अकेले ही उठाना पड़ा। वे इस चुनाव में अपने प्रति पक्ष वालों से खूब लड़े। नेशनलिस्ट पार्टी को उल्लेखनीय विजय भी प्राप्त हुई। शासन सभा में दक्षिण पक्ष बलवत्तर हो गया। उसमें बड़े-बड़े जमींदार, रईस, कल-कारखानों के मालिक शामिल हो गये। उन्हें राजनीति से कोई मतलब न था।

१९२६ के अन्त में, स्वामी श्रद्धानन्द एक धर्मान्ध द्वारा मार दिये गये। वह महावीर जिसने गोलियाँ खाने के लिए छाती दिखाई थी एक हत्यारे की छुरी का शिकार हो गया। आठ साल पहिले जब दिल्ली के जामा मस्जिद में हिन्दू मुस्लिमों की सम्मिलित सभा में, उन्होंने भाषण किया था, तब सर्वत्र हिन्दू मुसलमानों की जय के नारे गूँजे थे। एक ऐसे महात्मा का एक धर्मोन्मत्त द्वारा मारा जाना, जवाहर को बड़ा बुरा लगा।

१९२७ फरवरी में, ब्रुसेल्स नगर में पीड़ित जाति की एक महासभा हुई। कोमिन्टाङ्ग (चीन) के वाम पक्षवाले व अन्य देशों में, अमेरिका द्वारा पद्दलित दक्षिण अमेरिकावालों ने वाम पक्ष के मजदूरों से मिलकर इस महासभा की आयोजना की थी। युद्ध के बाद चूँकि जर्मनी में साम्राज्यवाद खतम हो गया था, इसलिए वहाँ की सरकार ने इस पर आपत्ति न की। इंग्लैण्ड, फ्रान्स, इटली आदि साम्राज्यवादी देशों की इस पर भृकुटि तनी। जावा, इन्डोचीन, फिलस्तीन,

नीशिया, ईजिप्ट के प्रतिनिधियों ने इसमें हिस्सा लिया। जवाहर को इसके बारे में पहिले ही मालूम हो गया था, उन्होंने इसलिए कांग्रेस को भी अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए लिखा। कांग्रेस ने यह काम उनको ही सौंप दिया। साम्राज्यवाद के विरोधियों की एक पार्टी बनी। इसमें जवाहर भी एक सदस्य थे। यूरप में जब जब उसकी बैठक होती रही, तब तब जवाहर उसमें हिस्सा लेते रहे। भारत आने के बाद उससे उनका सम्बन्ध जाता रहा। १९३१ में जब कांग्रेस और

ब्रिटिश सरकार में सन्धि हुई, तो वे उसमें से हटा दिये गये।

१९२७ में ग्रीष्मकाल में मोतीलाल यूरप आये। कुछ महीने सब मिलकर रहे। नवम्बर में रूस में क्रान्ति का दशम वार्षिकोत्सव मनाया गया। नेहरू उसमें सम्मिलित होने के लिए गये और मास्को में उन्होंने चार दिन बिताये। यह मोतीलाल और जवाहरलाल के लिए एक बड़ा महत्वपूर्ण अनुभव था।

उस साल दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में कांग्रेस का अधिवेशन मद्रास में होनेवाला था। उसमें शरीक होने के लिए जवाहरलाल अपनी पत्नी, बहिन और लड़की को साथ लेकर अपने देश वापिस आये।

यूरप में करीब दो वर्ष बिताने के बाद उनके मन में जो अब तक एक प्रकार का संघर्ष चल रहा था, वह समाप्त-सा हो गया। उनका दृष्टिकोण और विशाल हो गया। राष्ट्रवाद ही काफ़ी न था। राजनैतिक-स्वतन्त्रता भी पर्याप्त न थी। बिना साम्यवाद की स्थापना के न देश की उन्नति सम्भव थी, न व्यक्ति की ही। सोवियट रूस में कुछ ऐसी बातें उन्होंने

देखी थी, जो उन्हें पसन्द न थी, पर कई बातों ने उनको बहुत आकर्षित किया था। संसार की उन्नति का गुर उन्होंने वहाँ देखा था।

युरुप से बहुत से परिवर्तन आनेवाले थे। तदनुसार देश को जल्दी से तैयार करना अच्छा था। कांग्रेस का सारा दृष्टिकोण राजनैतिक ही था। कांग्रेस मजदूरों और नौजवानों में बहुत कुछ कर सकती थी। गांवों में भी बहुत काम किया जा सकता था।

परन्तु जवाहरलाल के ये सपने पूरे न हुए। वे फिर कांग्रेस की राजनैतिक भँवर में फँस गये। उन्होंने कांग्रेस के अधिवेशन के लिए बहुत से प्रस्ताव किये। करीब करीब सभी वर्किंग कमेटी द्वारा समर्थित भी हुए। खुले अधिवेशन में, उन्होंने ही स्वयं उन्हें प्रस्तुत किया और वे पास भी हुए। एनी बीसेन्ट ने उनके स्वतन्त्रता के प्रति प्रस्तुत किये गये प्रस्ताव का अनुमोदन किया। यह देखकर जवाहरलाल को शायद सन्देह भी हुआ कि क्या सब इन प्रस्तावों का अर्थ समझ पाये हैं कि नहीं। अधिवेशन के समाप्त होने से पहिले उनका सन्देह ठीक साबित हुआ। आनेवाले साइमन कमीशन के बहिष्कार के बारे में जो प्रस्ताव पास किया गया था, उसका एक अंश नेहरू के स्वतन्त्रता के प्रस्ताव के विरुद्ध था।
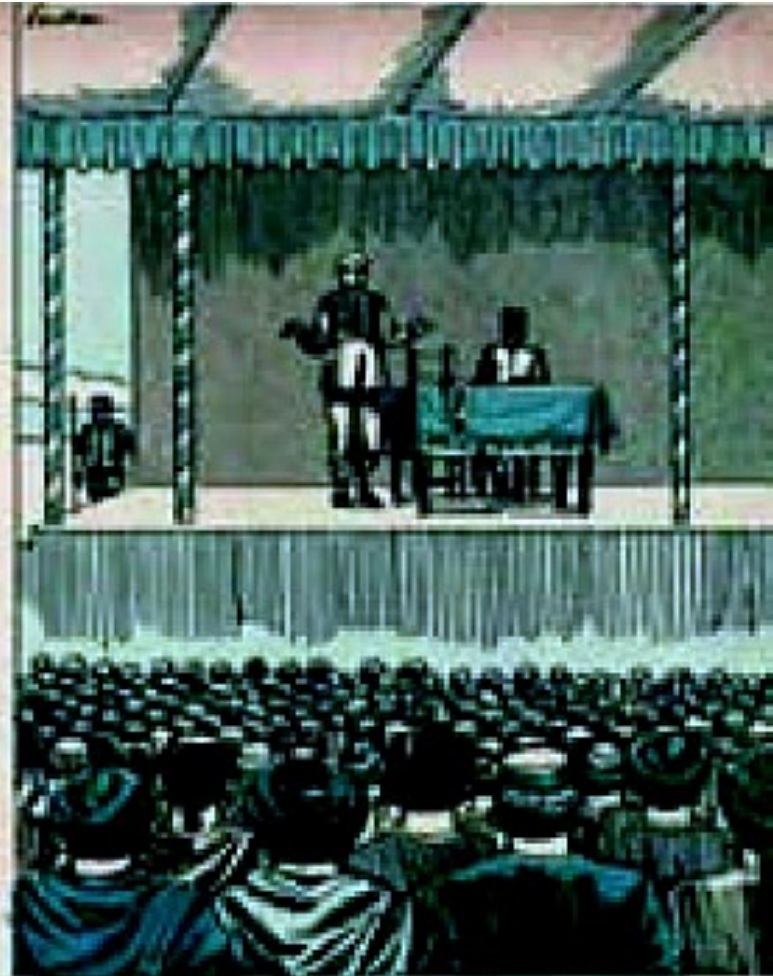
उस वर्ष के कांग्रेस अध्यक्ष डा. अन्सारी थे। वे नेहरू जी के मित्र थे। जवाहर जी के बहुत से प्रस्ताव पास कर दिये गये थे, अब उनको अमल में लाना था। इसी कारण जवाहरलाल नेहरू फिर कांग्रेस के सेक्रेटरी होने के लिए मान गये। इसका एक और भी कारण था, अगर वे ऐसा न

करने की कांग्रेस की स्थिति बिगड़ने की भी आशंका थी।

१९२८ में, जवाहर की नजर में भारत में बहुत राजनैतिक चेतना थी। मजदूर, किसान, नौजवान, बुद्धिजीवी, सभी सचेत थे। रेलवे में मजदूरों ने हड़ताल करके अपनी चेतना का परिचय भी दिया था। किसान वर्ग भी सावधान था। बारडोली में वल्लभ भाई के नेतृत्व में जो किसानों का सत्याग्रह हुआ, वह सफल तो हुआ ही, साथ ही सारे देश के किसानों के लिए आदर्श भी बन गया। देश में यूथ लीग बनने लगीं। उनमें सभी तरह की संस्थायें थीं, कुछ धर्म से सम्बन्धित थीं और कुछ का उद्देश्य क्रान्ति था।

इन सब से अधिक महत्वपूर्ण था, साइमन कमीशन का बहिष्कार। इस बहिष्कार में, उदार दलवालों ने भी कांग्रेस का साथ दिया और बहिष्कार को सफल बनाया। जहाँ जहाँ साइमन कमीशन गया, वहीं वहीं "साइमन गो बैक" के नारों से उसका "स्वागत" किया गया। अनेक भारतीयों को साइमन के नाम के साथ अंग्रेजी के दो और शब्द भी पता लग गये।

इस सिलसिले में जवाहरलाल अपनी जीवनी में एक घटना का वर्णन करते हैं। साइमन कमीशन के लोग नई दिल्ली के वेस्टर्न होटल में ठहरे हुए थे। रात को अंधेरे में उनको "साइमन गो बैक" के नारे सुनाई दिये। रात में भी उन नारों को सुनकर वे चिढ़ उठे। आखिर जब कुछ खोज की गई तो पता लगा कि गीदड़ ही चिल्ला रहे थे।

पर सवार हो गये और कैदियों की पीठ से रस्सी बांधकर, बीच में रखकर वे निकल पड़े।

तब तक काफ़ी रात हो गई थी। नगर में कहीं हलचल न थी। सिवाय आने जानेवालों के और गश्त लगाने वाले सिपाहियों के उनको कहीं कोई न मिला। वे जानना चाहते थे कि भद्र जीवित है या मर गया है। जब वे कदम्ब राजा के घरों से चले थे, तो उनका ख्याल था कि जो बाण से घायल हो गया था, वह घोड़े पर से गिर-गिराकर कहीं मर मरा गया होगा। पर कुन्तल नगर में उन्होंने सुना कि वह घायल आदमी राजमहल पहुँच गया था। यदि वह बात कर सकता है, तो सचाई सबको मालूम हो जायेगी।

वे नगर द्वार के पास पहुँचे। वहाँ पहरेदारों को, नगर रक्षक का दिया हुआ अनुमति पत्र दिखाया।

"मन्त्री के लड़के का दोस्त घायल होकर नगर पहुँचा है। पीठ में बाण घुस गया था। फिर वह इतनी दूर कैसे आया, आश्चर्य होता है।" एक ने कहा।

"उस घायल नौजवान का नाम भद्र है। फौलाद की तरह था। पर क्या फ़ायदा? पर जब उन्होंने बाण निकाला, तो रहे सहे प्राण भी बिचारे के निकल गये।" पहरेदारों ने कहा।

"अरे बिचारा....." दूतों ने झूठमूठ की सहानुभूति दिखाई। नगर के द्वार पार करके, वे जंगल की ओर चल दिये। भद्र की मृत्यु की वार्ता सुनकर वे बड़े खुश थे।

"जब हमारे राजा और मन्त्री चाल चलते हैं, तो उनका कोई जवाब नहीं,

धनगुप्त इसके लिए मान गया। उसने घोषणा करवा दी कि उसकी लड़की मर गई थी। उसका नाम उसने सोमप्रभा रखा और उसको गुप्त छुपाकर घर में ही पालने पोसने लगा। वह शीघ्र ही बड़ी भी हो गई। वह तब और भी सुन्दर हो गई।

इतने में वसन्तोत्सव आया। सोमप्रभा अपने घर की छत से वसन्तोत्सव देख रही थी, उस समय गुहचन्द्र नाम का लड़का उसको देखकर मोहित हो गया। होश आने पर वह घर गया और विरह की बाधा से तड़पने लगा।

शरीर से किरणें चमकने लगीं। और वह स्पष्ट रूप से बातें भी करने लगी; स्त्रियाँ यह देखकर बड़ी चकित हुईं। उन्होंने धनगुप्त से उसके बारे में कहा।

धनगुप्त ने वह चमत्कार स्वयं देखा और शिशु के सामने साष्टांग किया और पूछा—"देवी, तुम कौन हो, जो मेरे यहाँ पैदा हुई हो?"

"चाहे मैं कोई भी हूँ। मैं तुम्हारे घर रहकर तुम्हारा शुभ करूँगी। कभी मेरा किसी से विवाह न करना।" शिशु ने कहा।

उसका पिता गुहसेन अपने लड़के की बीमारी का कारण न जान सका और चिन्तित रहने लगा। तब गुहचन्द्र के मित्रों ने जो गुजरा था, उसको बताया।

गुहसेन धनगुप्त के घर गया। उसने उससे कहा—"तुम अपनी लड़की का हमारे लड़के के साथ विवाह करो।"

"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है? मेरी लड़की कहाँ है?" धनगुप्त ने कहा।

यह देख कि सीधे ढंग से काम न चलेगा, गुहसेन राजा को देखने गया, उसने राजा की पहिले कई बार मदद

की थी, इसलिए उसने सोचा कि मदद माँगने पर वह अवश्य देगा। उसने राजा को एक रत्न भेंट में दिया। उसने कहा—"राजा, मैं आपकी सहायता के लिए आया हूँ।" राजा ने कहा—"मैं अवश्य करूँगा।"

"गुहसेन ने राजा को बताया कि धनगुप्त की एक लड़की है और मेरा लड़का उस पर मुग्ध है। जब मैंने उससे मेरे लड़के के साथ उसका विवाह करने के लिए कहा, तो वह कहने लगा कि उसकी कोई लड़की ही नहीं है, यह झूठ है।"

राजा ने गुहसेन को कुछ सेना देकर कहा—"धनगुप्त की लड़की को जबर्दस्ती ले आओ और उसका विवाह अपने लड़के के साथ कर दो।" गुहसेन, सेना के साथ गया और उसने धनगुप्त के घर को घेर लिया।

सोमप्रभा ने यह जानकर कि उसके कारण पिता पर बड़ी आपत्ति आ गई थी, अपने पिता से कहा—"पिताजी क्यों मेरे लिए आफत मोल लेते हो? मेरा उस वैश्य युवक से विवाह कर दो। पर तुम अपने समधी से कहना कि मैं उसके साथ गृहस्थी नहीं करूँगी।"

गूढ़चन्द्र ने लम्बी सांस ली और उसने अपने विवाह की कहानी सुनाई। वह सुनकर वृद्ध ने कहा—"बेटा, आज सायंकाल भी मुझे अपने घर भोजन दो और मुझे यहीं सोने दो। मैं तुमको एक विचित्र बात दिखाऊँगा और तुम्हारी समस्या हल हो जायेगी।" इसके लिए गूढ़चन्द्र मान गया। उस दिन शाम को उसने ब्राह्मण को अपने पास बुलाया।

उस दिन रात को जब घर के सब सो रहे थे सोमप्रभा घर से निकल पड़ी। ब्राह्मण ने गूढ़चन्द्र को उठाया और कहा। "आओ, मेरे साथ आओ।" उसने गूढ़चन्द्र को अपने योग बल से भौंरा बना दिया और स्वयं भी भौंरा बन गया। दोनों छुपे छुपे सोमप्रभा के पीछे पीछे चलने लगे।

सोमप्रभा बहुत दूर गई और एक बड़ के पेड़ के नीचे पहुँची। वहाँ उसे सुन्दर संगीत और गायन सुनाई दिया। एक देवी, जो सोमप्रभा की तरह थी, एक ऊँचे आसन पर बैठी हुई थी। सोमप्रभा भी उसी आसन पर उस देवी के समीप बैठ गई। दोनों स्त्रियों ने दिव्य भोजन किया और दिव्य पेय लिये।

फिर सोमप्रभा ने दूसरी स्त्री से कहा— "बहिन, आज हमारे यहाँ एक शक्तिशाली ब्राह्मण आया हुआ है। उसके बारे में सोचने पर मुझे डर लगता है। मैं जल्दी ही घर वापिस चली जाऊँगी।" वह उठी और अपने घर की ओर चल दी।

गुहचन्द्र ने जो भौंरे के रूप में था, यह सब देखा और सुना। सोमप्रभा ज्योंहि घर की ओर चली तो, वे भी भौंरों के रूप में उससे पहले घर पहुँचे और मानुषी रूप में आकर, वे इस तरह सो गये, जैसे कुछ हुआ ही न हो। कुछ देर में सोमप्रभा आई और अपनी शैय्या पर सो गई।

ब्राह्मण ने गुहचन्द्र से कहा—"देख लिया न बेटा? तुम्हारी पत्नी मानव स्त्री नहीं है। देवता भी है और वह सब जानती है। किसी शाप के कारण उसने मानव जन्म लिया है, पर उसका अपने लोगों से सम्बन्ध नहीं टूटा है। ऐसी स्त्री क्या किसी मानव से गृहस्थी करने के लिए मानेगी? मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ, अगर तुमने वैसा किया, तो तुम्हारी पत्नी तुमसे गृहस्थी करने के लिए मान जायेगी।" गुहचन्द्र को एक बात बताकर, वह अपने रास्ते चला गया।

अगले दिन अन्धेरा होने के बाद गुहचन्द्र के घर एक वेश्या खूब सजधजकर आई। गुहचन्द्र उसको अपने कमरे में ले गया और एकान्त में उससे प्रेम की बातें करने लगा।

यह सब सोमप्रभा ने देखा। उसने अपने पति को अलग बुलाकर पूछा— "यह स्त्री कौन है?"

"वह एक वेश्या है। उसे मुझ पर बड़ा प्रेम है। वह मुझे अपने घर ले जाने

आई है। मैं जा रहा हूं।" गुहचन्द्र ने झट बोला।

"जब मैं आपकी पत्नी हूं, तो यह आपसे प्रेम करनेवाली कौन होती है? आप नहीं जा सकते!" सोमप्रभा ने कहा।

उसके बाद वह अपने पति के साथ गृहस्थी करने लगी और उसने अपने पति को बड़ा आनन्द दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा यह बताओ, सोमप्रभा को, देवता स्त्री होने पर भी साधारण स्त्री की तरह क्यों ईर्ष्या हुई। उस वृद्ध ब्राह्मण ने, जो जानता था कि वह साधारण स्त्री नहीं है, क्यों ऐसी चाल चली कि वह साधारण स्त्री की तरह ईर्ष्यालु बन जाये? यह चाल उसके साथ कैसे चल गई? यदि इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर निवारण न किया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"देवता स्त्रियों का मानवों से प्रेम करना असम्भव नहीं है। कितने ही इसके दृष्टान्त हैं। क्योंकि सोमप्रभा, गुहचन्द्र से प्रेम न करती थी, इसलिए ही उसने उसके साथ गृहस्थी न की थी। कारण यही था, यह न था कि वह देवता स्त्री थी, जब ईर्ष्या की बात है, प्रेम जहाँ सम्भव है, वहाँ ईर्ष्या भी सम्भव है। यदि सोमप्रभा में प्रेम की कमी है, तो कम से कम ईर्ष्या पैदा करने के लिए ब्राह्मण ने यह चाल चली थी और वह चाल चल भी गई।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

तलाक

सृष्टि की आदि में अरणी नाम का एक ऋषि रहा करता था। उसने सोचा, सृष्टि में इतने तरह के प्राणी क्यों हैं? क्या यह काफ़ी नहीं है, यदि केवल मनुष्य ही हों?

अरणी ने ब्रह्मा के साक्षात्कार के लिए तपस्या की और उनसे, अन्य प्राणियों को मनुष्य रूप में बदलने का वर लिया। जब वह तपस्या से लौट रहा था, तो उसने एक हरिण को भागते हुए और एक शेर को उसका पीछा करते, गरजते देखा। तुरत उसने हरिण को एक स्त्री बना दिया और शेर को एक पुरुष।

पुरुष, स्त्री को देखते ही, उस पर मुग्ध हो उठा। पुरुष ने उसे प्रेम समझा, उस स्त्री को अपने प्रेम के बारे में वर्णन करके सुनाया। वह स्त्री भी, उसके प्रेमालाप को सुनकर बड़ी खुश हुई।

उन दोनों की घनिष्ठता देखकर अरणी बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उन दोनों को, विवाह की विधि सम्पन्न करके, पति, पत्नी बना दिया। वे जंगल में एक घर बनाकर रहने लगे।

पति जंगल जाता, जन्तुओं को मारकर लाता और पत्नी से उनका माँस पकाने के लिए कहता। पत्नी को माँस की बू भी पसन्द न थी। वह फल आदि खाया करती। पति को, पत्नी का माँस न खाना अच्छा न लगा। पत्नी को, पति का जन्तुओं का मारना पसन्द न था। वह जंगल में हरिण और पक्षियों को पाला करती। अरणी भी, पास में एक आश्रम बनाकर, उनको देख रहा था।

होते होते पति, पत्नी में मतभेद अधिक होने लगे। पत्नी जिन हरिणों को पालती, पति उनको मारकर खा जाता। वह पति से कहा करती, "क्यों नहीं मेरी तरह फल आदि खाते हो?" "तुम मेरी तरह माँस खाओ।" पति, पत्नी से कहा करता।

दोनों में धीमे धीमे अनबन हो गयी। परन्तु वे गुज़र करते गये। उनके कई लड़के और लड़कियाँ हुईं। उनमें से कई के गुण माता के से थे और कई के पिता के से।

पति पत्नी को अक्सर पीड़ा करता। तरह तरह से उसको सताता। एक बार पत्नी पर इतना क्रोध आया कि उसको वह जानवर की तरह मारने को तैयार हो गया। पत्नी डरकर भाग गई। पति उसका पीछा करता आता। पत्नी ऋषी के आश्रम में घुस गई। उसके पीछे पति भी वहाँ पहुँचा।

ऋषी ने उनका ध्यान करके कहा। "तुम एक दूसरे को द्वेष करते क्यों गुज़र करते हो? क्यों नहीं अलग होकर अपने रास्ते जाते हो? कहकर उसने दो चमचमाते पत्ते लेकर, पति पत्नी को एक एक दिया।" इन्हें लेकर तुम दोनों एक एक दिशा में चले जाओ। जब ये पत्ते मुरझाने लगेंगे तब तुम्हारी विमुक्ति हो जायेगी।" ऋषी ने कहा।

पति पत्नी उन पत्तों को लेकर अलग अलग दिशा में चले गये और जब वे पत्ते मुरझा गये तो पुरुष, शेर बन गया और स्त्री हरिण।

उनके बच्चों में हरिण के गुण और शेर के गुण, हमेशा के लिए रह गये।

खुशामद करने लगा। जल्दी ही उसकी कोतवाल से गहरी दोस्ती हो गई। वीरबल अक्सर कोतवाल को खाने पर बुलाता और उसको अच्छी अच्छी दावतें देता। कोतवाल भी वीरबल की हर तरह से मदद करता। शहर में अगर कोई अच्छा गवैय्या या व्यापारी आता, तो कोतवाल उसका वीरबल से परिचय कराता। वीरबल उनका खूब सत्कार करता।

एक बार रम्भा नाम की नर्तकी इस प्रकार वीरबल के पास आई। उसने गा कर, नाचकर, उसको और उसके अतिथियों को खूब प्रसन्न किया। वह बहुत सुन्दर भी थी। वीरबल ने उसे खूब पुरस्कार दिया। यह देख चकित हो, रम्भा ने वीरबल से कहा—"हुजूर! अगर आप जैसे मुझे चाहने वाले मिलें तो दो ही आने कमानेवाला पेशा मैं छोड़ दूँगी। क्या आप मुझ पर कृपा कर सकेंगे?"

उसने उसको अपना रखैल बनाना स्वीकार कर लिया। "मैं तुम्हारा पालन पोषण करूँगा।"

तब से वह प्रति दिन रम्भा के घर आया जाया करता। वे मौज से मिलकर रहते। जब वीरबल उसके घर आकर जा रहा होता, तो वह बड़ी दुःखी होती। कुछ समय बीत गया। एक दिन कोतवाल ने वीरबल से पूछा—"आपने क्यों नहीं विवाह किया?"

"यदि उत्तम वंश में उत्पन्न कोई भी मिले तो उससे विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" वीरबल ने कहा।

कुछ दिनों बाद कोतवाल वीरबल के लिए एक सम्बन्ध लाया। कन्या उत्तम वंश की थी। वीरबल उससे शादी करने के लिए मान गया। उसका नाम मनोरमा था। उनका विवाह हो गया।

रम्भा ने कहा—"साहूकार को माफ़ कर दिया जाये और उसकी सज़ा रद्द कर दी जाये।" राजा तब तक यह भी भूल गया था कि साहूकार ने क्या अपराध किया था। फाँसी की सज़ा रद्द करते हुए फ़रमान लिखकर रम्भा के हाथ में दे दिया। उसे देखते ही, कोतवाल ने बीरबल को छोड़ दिया।

रम्भा बीरबल को अपने घर ले गई। वहाँ उसने रम्भा के आँसू पोंछते हुए कहा—"पगली, क्यों तुम घबरा गई थी? यह सब तो एक राजकार्य के लिए खेला गया नाटक है। मुझे अब अपने देश वापिस जाना है। फिर जल्दी ही मैं वापिस आऊँगा और तुम्हें भी साथ ले जाऊँगा।"

जब उसने यह कहा तो रम्भा बड़ी घबराई परन्तु बीरबल ने उसको आश्वासन दिया। रम्भा से विदा लेकर वह दिल्ली वापिस गया। "केरल राजा ने जो माँगा था, उन चारों चीज़ों का मैं इन्तज़ाम कर आया हूँ।"

"कहाँ हैं वे?" अकबर ने खुशी खुशी पूछा।

"वे केरल की राजधानी में ही हैं। यदि आपने मुझे अधिकार दिया तो मैं आपका दूत बनकर, केरल राजा के पास जाऊँगा और उन्हें उनको दिखाऊँगा।" बीरबल ने कहा। अकबर ने अधिकार-पत्र लिखा। उस पर हस्ताक्षर किया और राजमुद्रा लगाकर बीरबल को दे दिया।

बीरबल बहुत से नौकर-चाकर के साथ केरल के राजा के पास गया और उसे उसने अकबर का पत्र दिया।

केरल के राजा ने वह पत्र पढ़कर पूछा—"वे चारों चीज़ें कहाँ हैं?"

"अभी आपके सामने रखता हूँ।" कहकर बीरबल ने, अपने नौकर को, रम्भा

को और मनोरमा को लाने के लिए कहा। वे आये।

तब वीरबल ने राजा से इस प्रकार कहा—"मैं राजकुमार के रूप में, इस नगर में कोतवाल की कचहरी के सामने रहा। कोतवाल की और मेरी अच्छी दोस्ती थी। उसने ही, मनोरमा का सम्बन्ध खोजकर, उसके साथ मेरा विवाह करवाया था। वह उत्तम वंश में पैदा हुई थी। उसकी उदारता की परीक्षा के लिए मैं एक दिन, एक तरबूज काटकर, उसे एक कपड़े में लपेटकर लाया और उससे मैंने कहा कि यह राजकुमार का सिर था। उससे यह भेद रखने के लिए कहकर मैं बाहर चला गया। तुरत उसने चिल्ला चिल्लाकर आसमान उठा दिया और कोतवाल से शिकायत कर दी कि मैंने राजकुमार की हत्या कर दी थी। फिर मुझे मौत की सजा दी गई। यह खबर सुनकर, मेरी पत्नी ने मुझे छुड़ाने की कोशिश करना तो अलग, शहर भी घोषित की कि मुझसे पिंड छूट गया था। इसलिए, यह उत्तम वंश की हीन व्यक्ति है।"

राजा यह बात मान गया। वीरबल ने फिर कहा।

"यह रम्भा नाचकर, नाचकर अपना पेट भरा करती थी। हीन जन्म की थी। परन्तु इसने सचमुच मुझसे प्रेम किया था। जब इसने मेरी मौत की सजा सुनी, तो यह बड़ी दुःखी हुई। आखिर इसने मेरी सजा कैसे रद्द करवा दी, आप जानते ही हैं। यह हीन जन्म की उत्तम स्त्री है।"

राजा यह भी मान गया।

"तीसरा कुत्ता है। कुत्ता कोई और नहीं, सामने खड़ा कोतवाल ही है।" वीरबल ने कहा।

कोतवाल ने क्रुद्ध होकर पूछा — "तुम मुझे कुत्ता कहते हो?"

"मैं यह बात सिद्ध कर सकता हूँ। कुत्ता जो खाना खिलाता है, उसको मालिक समझता है और उसके सामने दुम हिलाता है और आप भी, जब तक मुझसे काम पाते रहे, तब तक मेरे सामने कुत्ते की तरह दुम हिलाते रहे और यह दिखाते रहे कि बहुत नजदीकी दोस्त हैं। मनोरमा के शिकायत करने पर, बिना यह जाने कि क्या सच था, क्या झूठ था, राजा के ईनाम के लालच में पड़कर, मेरे बातों के बारे में सोचा तक नहीं और मेरे विरुद्ध ही कार्यवाही शुरू की। क्या यह मालिक के कुत्ते की आदत नहीं है?" बीरबल ने कहा।

राजा यह बात भी मान गया।

"सिंहासन पर आसीन राजे आप ही हैं। मैं जो कुछ कहूँ, बुरा न मानिये। आपने यह सुनते ही कि मैंने राजकुमार की हत्या की है, मौत की सजा दे दी। यह अपराध सचमुच किया गया है कि नहीं, यह न सोचना राजे का अन्याय ही है न?"

राजा को बीरबल की बात की सच्चाई को स्वीकार करना पड़ा। राजा ने उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की, उसे कुछ दिन अपने यहाँ रखा। फिर उसको बहुत-से उपहार देकर भेज दिया।

बीरबल, रम्भा और मनोरमा के साथ दिल्ली चला गया। अकबर को जो कुछ हुआ था, उसने बताया। चूँकि बीरबल एक विषम परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ था, इसलिए बादशाह ने उसको अच्छी जागीर दी। बीरबल बड़े सुख से रहने लगा।

उल्टी-सीधी बाज़ी

पन्नालाल के गाँव में वेन्कटेश, पन्नालाल को बहुत चाहता था। जब वेन्कटेश के घर एक दूसरे गाँव से कृष्ण आया, तो दोनों पन्नालाल के बारे में बहुत देर तक बातें करते रहे। वेन्कटेश ने पन्नालाल की कई कहानियाँ सुनाकर कहा—"पन्नालाल बड़ा आदमी है। कोई ऐसा काम नहीं है, जो वह न कर सके।"

"ऐसे बहुत से काम हैं, जो कई आसानी से कर लेते हैं और तुम्हारा पन्नालाल उन्हें नहीं कर पायेगा। नहीं कर पायेगा, यह मैं तुम्हें ही दिखा दूँगा। यदि तुम मान गये, तो क्या तुम पचास रुपये दोगे?" कृष्ण ने पूछा।

"ओ कृष्ण, तुम कह रहे हो और और कर सकते हैं और पन्नालाल नहीं कर सकता, यदि मैं यह मान गया, तो तुम्हें जरूर पचास रुपये दूँगा। बताओ, वह क्या काम है?" वेन्कटेश ने पूछा।

"मैं कहता हूँ कि तुम्हारे पन्नालाल को चोरी नहीं करनी आती है। हाँ, कहते हो या नहीं?"

वेन्कटेश हक्का बक्का रह गया। क्या कहा जाये, उसे न सूझा। कृष्ण से बाज़ी जीतने के लिए वह कैसे कहे कि पन्नालाल चोरी कर सकता था। अगर पचास रुपये के लिए, उसने कृष्ण की बात मान ली, तो वह कहता फिरेगा कि वेन्कटेश की नजर में पन्नालाल चोर है। इससे अच्छा तो यही है कि हार मान ली जाये और पचास रुपये दे दिये जायें। यह सोच वेन्कटेश अन्दर गया, पचास

रुपये लाया। कृष्ण के हाथ में रख, उसे भेज दिया।

वेंकटेश के पास सब मिलाकर, वे पचास रुपये ही थे, उसकी पत्नी कई दिनों से बालियाँ खरीदने के लिए उसे तंग कर रही थी। उन्हें खरीदने के लिए, एक एक करके उन रुपयों को जमा किया था और दस रुपये जमा कर लेता, तो उसे वह खरीदकर दे देता। एक और माह में, वेंकटेश की साली की शादी होनेवाली थी। उसकी पत्नी नई बालियाँ पहिनकर, उस शादी में जाना चाहती थी। जिस दिन वेंकटेश बाज़ी में हार गया था उसी दिन वेंकटेश की पत्नी ने उसे दस रुपये देते हुए कहा—"अब जाकर बालियाँ खरीद लाओ।"

वेंकटेश ने कहा कि उसके पास पैसा न था और जो कुछ हुआ था, उसे बता दिया। उसकी पत्नी नाराज़ हुई और दुखी भी। "क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई थी! अगर कोई अक्लमन्द होता, तो उसकी बात मान जाता और पचास रुपये बचाता। यह सब मेरा मुकद्दर है।"

वेंकटेश की सास अपनी लड़की के पास ही रहा करती थी। वह यह जानकर कहने लगी—"अरे, बाप रे बाप, यह भी क्या बदकिस्मती है। कहीं ऐसी बाज़ी भी लगाई जाती है! यह मनहूस पन्नालाल कहाँ से आ मरा!"

"पन्नालाल को कुछ न कहो माँ! उस बिचारे ने क्या किया है!" लड़की ने कहा।

"और क्या करेगा! उसी की वजह से तो सारा रुपया चला गया। जो उसका ढंग। पचास रुपये कोई मामूली रकम है!" वेंकटेश की सास ज़ोर से बकने लगी।

उसका शोर पास की लड़की ने सुना। उसने पन्नालाल की पत्नी के पास जाकर कहा कि सामने घर में लोग उसके पति को बुरी तरह कोस रहे थे।

यह सुन मीनाक्षी को बड़ा बुरा लगा। उसने पति के पास जाकर कहा—"जी मैंने सुना आपकी वजह से वेंकटेश के पचास रुपये चले गये हैं। क्या किया है आपने!"

"मैं तो कुछ नहीं जानता। मैं तो पिछले दिनों वेंकटेश से मिला भी नहीं हूँ।" पन्नालाल ने आश्चर्य से कहा।

"वेंकटेश की पत्नी चिल्ला चिल्लाकर आसमान उठा रही है। जाकर मालूम तो कीजिये कि आखिर बात क्या है!" मीनाक्षी ने कहा।

पन्नालाल तुरत वेंकटेश के घर गया। वेंकटेश दुःखी एक कोने में बैठा था। पन्नालाल ने उससे सब कुछ मालूम कर लिया। "जो हुआ सो हुआ, अब यह देखना है कि तुम्हारी पत्नी कहीं बालियाँ पहिनकर शादी में जाये।"

वेंकटेश ने साफ़ साफ़ कहा—"मुझे दान वान लेना मंजूर नहीं है।"

"यह क्या मैं नहीं जानता हूँ। ऐसा कुछ न होगा। अच्छा फिर कभी मिलेंगे!" कहते हुए, पन्नालाल ने मुस्कराते मुस्कराते वेन्कटेश से विदा ली।

पन्नालाल, कृष्ण का घर जानता था। वह रात को काला कम्बल ओढ़कर, सिर पर काला कपड़ा डाल, हाथ में एक तलवार लेकर, सीधे कृष्ण के घर गया और किवाड़ खटखटाया।

कृष्ण तब तक सो चुका था। उसने पूछा—"कौन है वे!" उसने जाकर दरवाज़ा खोला।

पन्नालाल ने आवाज़ बदलकर कहा—"अगर चूँ भी की, तो छाती में छुरी भोंक दूँगा।"

कृष्ण पसीना पसीना हो गया। वह डर से काँपने लगा। पन्नालाल ने अन्दर जाकर किवाड़ पर चटखनी लगा दी। "तुम अपना पैसोंवाला बक्सा दो।"

कृष्ण ने काँपते काँपते, एक काठ का बक्सा लाकर दिया।

"अब मैं जा रहा हूँ। यदि शोर शार किया, तो तुम्हारी जान निकाल दूँगा।" पन्नालाल दरवाज़ा खोलकर, बक्सा लेकर बाहर चला गया।

कृष्ण ने अपनी पत्नी को उठाकर सब बता दिया।

"अरे बाप का पैसा है। दोस्त से बातें यूँ थोड़े जाती हैं! क्या वह हमारे पास रहता! कोई चोर पन्नालाल को चाहता होगा। तुम्हारी बात सुनकर उसने तुमसे बदला ले लिया है। उस बक्से में दो सौ रुपये थे और गहने भी। अब क्या खाओगे? और क्या पीओगे?" कृष्ण की पत्नी ने कहा।

"सच है। मैं बेवकूफी में कुछ का कुछ बक गया था और मैंने पचास रुपये बना लिए थे। अब उससे छः गुना भी खो बैठा हूँ।" कृष्ण ने कहा।

"यही बक्सा क्या चोर ले गया था?" पन्नालाल ने थैले में से बक्सा निकाला।

कृष्ण हैरान रह गया। "हाँ हाँ, आपको कैसे मिला यह पन्नालाल जी!" उसने पूछा।

"रात को मैंने ही तो तुम्हारे घर चोरी की थी। यानि तुमने बाज़ी नहीं जीती। वेंकटेश ने ही जीती। इसलिए तुम वे पचास रुपये जो तुमने उससे जीते थे, दे दो और चूँकि तुम हार गये हो, इसलिए उसके साथ पचास रुपये और मिलाकर दो, यानि सौ रुपये। इसी बक्से में शायद उसका रुपया होगा मैंने इसे खोलकर भी नहीं देखा है।" पन्नालाल ने कहा।

कृष्ण ने अपनी चाबी से बक्सा खोलकर देखा। बक्से में रखी कोई चीज़ नहीं खोई गई थी। कृष्ण ने उसमें से सौ रुपये निकालकर वेंकटेश के सामने रखे।

"हम दोनों दोस्त हैं और यह बेमतलब की बाज़ी है। मुझे तुम्हारे पैसे की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरा पैसा मुझे दे दो। यही काफ़ी है।" वेंकटेश ने कहा।

कृष्ण बड़ा शर्मिन्दा हुआ, क्योंकि वह वेंकटेश का रुपया हथिया लेना चाहता था। उसने उस दिन पन्नालाल और वेंकटेश को अपने घर रहने के लिए कहा और शाम कुछ देर पड़ जाने के बाद उन्हें भेज दिया।

कुछ देर बाद शम्भु को राजा के पास ले जाया गया। वहाँ राजा और मन्त्री थे। शम्भु ने उनको झुककर प्रणाम किया।

"क्यों भाई, यह मुख की कलम राजा को बेचोगे?" मन्त्री ने शम्भु से पूछा। जब शम्भु ने यह बात, जो उसने अपनी पत्नी से मज़ाक में कही थी, मन्त्री के मुख से सुनी तो उसकी घबराहट और भी बढ़ गई।

"यह सोचकर कि मुझे कोई नहीं सुन रहा था, मैंने बेवकूफ़ी से पत्नी के सामने कुछ कह दिया था। इस बार यह गलती माफ़ कीजिये।" यह कहते कहते उसने पैरों पर साष्टांग किया।

"डरो मत। मैं तुम्हारी गलती नहीं निकाल रहा हूँ। सचमुच, तुम्हारी मुख की कलम खरीदना चाहता हूँ। बताओ, कितने में दोगे?" मन्त्री ने पूछा।

शम्भु को तब भी मन्त्री की बात में विश्वास न हुआ। वह अब भी घबराया रहा था। "मैंने इसलिए दाढ़ी बढ़ाई थी कि नाई के पैसे बचाकर अपनी पत्नी को एक साड़ी खरीदकर दे दूँगा। यही बात थी। मेरा यह ख्याल न था कि यह कलम है और इसे मैं बेचूँगा। महाराज! मुझे छोड़ दीजिये।"

"कुछ भी हो, पैसे के लिए ही तो तुमने दाढ़ी बढ़ाई थी। बताओ, कितना चाहिए। वह दाम देकर हम तुम्हारी दाढ़ी ले लेंगे।" मन्त्री ने कहा।

यद्यपि शम्भु को विश्वास हो गया था कि वे उसे दण्ड नहीं देंगे। फिर भी दाढ़ी के दाम बताने की उसकी हिम्मत न हुई। आखिर जैसे तैसे उसने मुख खोलकर कहा कि दस रुपये दिलवाइये।"

मन्त्री ने तुरत उसको दस रुपये दे दिये। उसे नाई के पास भेजा। उसकी

दाढ़ी बाल वगैरह कटवाये। फिर उसके लिए कपड़े उसकी पत्नी के लिए साड़ी और जेवर भी दिलवाये।"

वह खुशी खुशी घर गया और कपड़े और पैसे वगैरह उसने अपनी पत्नी को दिखाये।

"तुम्हारी मनहूस दाढ़ी के लिए राजा ने यह सब दिया है!" पत्नी ने उसकी बात में अविश्वास करते हुए पूछा।

"दाढ़ी न कहो। शुभ की कामना करो। तुम कह रही थी कि उसे कोई न खरीदेगा! राजा ने पूछा, बताओ, उसके लिए कितने पैसे चाहिए। मैंने दस रुपये ही माँगे। अगर सौ या हजार भी माँगता तो भी वे दे देते।" शम्भु ने कहा।

"तो तुमने दस रुपये ही क्यों माँगे! यदि सौ या हजार माँगते तो आराम से जीते।" पत्नी ने कहा।

बातें बढ़ीं। शम्भु ने अपनी पत्नी को डाँटा डपटा। उसने उसको भी डाँटा। दोनों का झगड़ा पड़ोस के घर की रईस की पत्नी ने देखा और सुना। शम्भु की पत्नी के उधर जाने तक, वह वहीं खड़ी रही। फिर उसके बारे में उसने अपने पति से कहा।

राजा और मन्त्री एक दूसरे का मुख देखने लगे।

"तो सौदा करो।" राजा ने मन्त्री से कहा।

"कितने में दोगे?" मन्त्री ने कर्पकेश से पूछा।

"इसे मैं बड़े शौक से पालता आ रहा हूँ। बहुत बढ़ाई है। इस फसल के लिए कम से कम दस हज़ार रुपये चाहिए।" कर्पकेश ने कहा।

"तुम मुख की फसल के व्यापार में बड़े चतुर मालूम होते हो! कल एक बेवकूफ़ अपनी फसल को थोड़े रुपये में बेच गया था। फिर भी, हमें बिना बताये, बिना कर दिये, तुम मुख की फसल का व्यापार कर रहे हो। इसलिए हम तुम पर दस हज़ार रुपये जुरमाना लगाते हैं।" मन्त्री ने कहा।

कर्पकेश की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने घबराकर, हाथ जोड़कर कहा—"महाराज, मुझे माफ़ कीजिये। मैंने कभी इसका व्यापार नहीं किया है। यह जानकर कि हमारे पड़ोस के शम्भु ने अपनी दाढ़ी दस रुपये में आपको बेची है, मैं भी लालच में अपनी दाढ़ी बेचने चला आया। मेरे अपराध को क्षमा कीजिये।"

दरबारी यह सुनकर ठठाकर हँसे।

"राजा, जब किसी गरीब की मदद करना चाहते हैं, तो किसी न किसी बहाने करते हैं। यह देख, तुम जैसों की पैसे कमाने की मूर्खता से बढ़कर कोई और मूर्खता न होगी। इस बार तुम्हें माफ़ कर देते हैं। पर कभी आगे पैसे के लिए इस तरह की मूर्खता न करना।" मन्त्री ने कर्पकेश को यूँ समझाकर भेज दिया।

तब हो जाती, तो बात इतनी दूर जाती ही न। इसलिए उसने कहा—"जैसी आपकी मर्ज़ी।"

"मेरी सलाह ये है। जिस बात का तुमसे सम्बन्ध नहीं है, उसके बारे में अधिक न मालूम करो। बीच रास्ते में गलत रास्ते पर न जाओ। रात को जो गुस्सा आये, उसे सवेरे तक काबू में रखो और अब जाओ।" मालिक ने कहा।

राजू ने एक लम्बी साँस छोड़ी और अपने गाँव की ओर निकल गया। वह नगर पार करके कुछ दूर गया था कि उसे विचित्र दृश्य दिखाई दिया। एक सूखे पेड़ के चारों ओर चालीस ऊँट खड़े थे। उन पर सोने के सिक्कों के बोरे थे और एक बूढ़ा सा आदमी उन सिक्कों को सूखी टहनियों पर पत्तों की तरह लगा रहा था। यह देख राजू ने पूछना चाहा—"क्यों यह बेमतलब का काम कर रहे हो!" पर उसे इतने में अपने मालिक की पहिली सलाह याद आई—"तुम उन बातों के बारे में जानने की कोशिश न करो, जो तुमसे सम्बन्धित नहीं हो।"

यह याद आते ही राजू ने मुँह न खोला और अपने रास्ते चलता गया। वह दो तीन कदम आगे गया था कि उस बूढ़े आदमी ने कहा—"ऐ....ज़रा इधर तो आओ।"

"क्या चाहिये!" राजू ने पीछे मुड़कर पूछा।

"मैं दो सौ वर्ष से यही खेल खेल रहा हूँ। हर कोई जो इस तरफ़ से गुज़रता है मुझ से पूछता है, मैं यह क्या कर रहा हूँ। इसलिए मैंने शपथ ली थी, जो इसके बारे में पूछेगा, उसका सिर काट दूँगा।

और जो नहीं पूछेगा, उसे मैं सब दे दूँगा। जो इस सड़क से गया, मैंने उन सब के सिर काट दिये वह देखो, ढेर पड़ा है। इतने आदमियों में तुम ही एक हो, जो मुझ से बिना पूछे चले गये। इन सिक्कों को जमा करके ऊँटों पर लादकर ले जाओ।" उस काले दाढ़ी वाले आदमी ने कहा।

राजू का भाग्य खिल उठा। उसने बीस वर्ष जो मेहनत की थी, उसका बीस हज़ार गुना उसको फ़ायदा मिला। वह चालीस ऊँटों को लेकर कुछ दूर गया था कि तीन आदमी मिले। वे चालीस ऊँटों पर सोने के सिक्के लादकर ले जा रहे थे।

"भाई तुम कहाँ तक जा रहे हो?" राजू ने उनसे पूछा।

"अरे, बन्दरगाह तक जा रहे हैं। वहाँ हम पैसे से माल खरीदकर वापिस चले जायेंगे।" उन्होंने कहा।

कुछ दूर राजू ने उनके साथ सफ़र किया। फिर वहाँ रास्ता फटा।

"इस रास्ते गये तो ताड़ी की दुकान आयेगी। वहाँ पीकर, खाओ, प्यास बुझाके, आओ।" तीनों ने राजू से कहा। राजू हाँ कहने ही वाला था कि उसे मालिक की दूसरी सलाह याद हो आई। "बीच रास्ते में, गलत रास्ते पर न जाना।"

मालिक की पहिली सलाह का पालन करके खूब फ़ायदा हुआ था, इसलिए उसने दूसरी सलाह पालन करने की ठानी। उसने औरों से कहा—"मैं नहीं आऊँगा तुम ही जाओ। मैं यहीं तुम्हारी इन्तज़ार करूँगा। तुम ही जाओ।"

"तो हमारे वापिस आने तक, तुम हमारे ऊँट भी देखते रहो।" कहकर, वे उस रास्ते चले गये। पर जभी वे ताड़ी

की दुकान तक न पहुँचे थे कि डाकुओं ने उन पर हमला किया और उनको मार दिया और उनके पास जो थोड़े बहुत सोने के सिक्के थे, उन्हें ले गये।

राजू उनकी इन्तज़ार कर रहा था। इतने में ताड़ी की दुकान से एक आदमी भागा भागा आया और उसने बताया.... "तेरे दोस्त मर गये हैं।"

राजू अपने चालीस बैलों के साथ उनके चालीस ढ़ोर भी हाँककर अपने गाँव पहुँचा। वहाँ अपनी ढ़ोरों को एक खेत में छोड़कर अपने घर गया। किवाड़ खटखटाये। राजू की पत्नी ने किवाड़ खोले। वह अपने पति को न पहिचान सकी। उसने पूछा—"आप कौन हैं? आपको क्या चाहिए?"

"मैं परदेशी हूँ। आज रात मैं आपके घर सोऊँगा।" पत्नी को चिढ़ाकर बाद में सच बता देने की उसने सोची।

"मेरे पति घर में नहीं हैं। मैं अकेली घर में हूँ। इसलिए आप घर में तो नहीं सो सकते। पर उस गौशाला में सो सकते हैं। खाना खाना चाहते हो?" राजू की पत्नी ने पूछा।

राजू ने हाँ कहा। उसकी पत्नी ने उसको रूखा सूखा भोजन दिया। राजू को अपनी पत्नी का शील देखकर बड़ा सन्तोष हुआ। उसने सवेरा होने पर, उसको सच बताकर आश्चर्य चकित करने की सोची। वह गौशाला में गया। पयाल बिछाकर उस पर लेट गया। पर उसे नींद न आई। उसकी आँखें, घर पर ही लगी हुई थीं।

अन्धेरा हो जाने के बाद राजू ने देखा कि कोई आदमी आया। किवाड़ खटखटाया और अन्दर जाकर उसने किवाड़

बन्द कर दिये। जो कुछ सोचकर वह तब तक खुश हो रहा था, वह काफ़ूर हो गया और उसे इतना गुस्सा आया कि वह पत्नी को मारने तक उतारू हो गया।

"इस कुलटा ने शायद किसी और से शादी कर ली है। इसलिए ही इसने मुझे घर में सोने न दिया। इन दोनों के अभी प्राण लेता हूँ।" सोचता सोचता राजू तलवार ले उठा। पर इतने में उसको अपने मालिक की तीसरी सलाह याद आई। "रात को जो गुस्सा आये उसे सवेरे तक काबू में रखो।"

जब जो करना है, उसे सवेरे भी किया जा सकता है। यह सोच राजू फिर लेट गया।

सवेरा हुआ। एक युवक के पीछे राजू की पत्नी आई। "पकाने बनाने की फ़िक्र न करो, मैं खेत से कुछ फलियाँ ले आऊँगा। थोड़ा हम खा लेंगे और पेट भर उस परदेशी को दे देंगे।" यह लड़का, जब राजू घर छोड़कर गया था, उसकी पत्नी के गर्भ में था।

राजू को जब मालूम हुआ कि वह उसका लड़का ही था, वह फूला न समाया। वह गौशाला से भागा भागा आया और उसने अपने लड़के को गले लगा लिया। "अरे पगले! फलियों की क्या ज़रूरत है, हमारे पास अस्सी बैलों पर लदा सोना है। अच्छी साग-सब्ज़ी खरीद, खरीदकर लाओ। अब हमें भूखे मरने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

राजू की पत्नी यह जानकर कि वह परदेशी उसका पति था और बीस साल बाद सम्पत्ति बनाकर आया था, बड़ी खुश हुई। उसका लड़का भी बड़ा खुश हुआ।

दर्शन करके उसने कहा—"मैं, तुम्हारी आज्ञानुसार लवण का वध करके, उसके राज्य पर राज्य कर रहा हूँ। परन्तु बारह वर्षों से चूँकि तुम्हें देखा न था, इसलिए तुम्हें देखने भागा भागा आया हूँ।"

राम ने शत्रुघ्न का आलिंगन करके, कहा—"राजा को राज्य करना ही पड़ता है। तुम अपना राज्य करते रहो। जब कभी मुझे देखना हो, चले आना।" कहकर, राम ने उसे भेज दिया। लक्ष्मण और भरत उसको बहुत दूर भेजने गये।

इसके कुछ दिनों बाद, एक देहाती ब्राह्मण, अपने पाँच वर्ष के लड़के का शव लेकर राजप्रासाद के द्वार के पास खड़ा हो रोने लगा। अपने इकलौते लड़के की असमय मृत्यु पर शोक करता, वह कह रहा था कि इक्ष्वाकुओं के समय में, राम के शासन में देश की यह हालत हो गयी थी।

राम को यह बात मालूम हुई। वे बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने अपने मन्त्री वसिष्ठ आदि ब्राह्मणों को बुलाकर, ब्राह्मण बालक के असमय मरण के बारे में उनसे कहा। नारद ने राम से कहा कि कोई शूद्र

को स्वीकार किया। अगस्त्य ने राम को एक आभूषण उपहार में दिया। राम ने उसे स्वीकार करके, कहा—"स्वामी, यह कोई दिव्य आभूषण मालूम होता है। यह आपको किसने दिया था?" इस प्रश्न के उत्तर में अगस्त्य ने श्वेत की कथा सुनाई।

एक जंगल था, जिसका क्षेत्रफल हजार योजन था। उसके बीच में, एक योजन क्षेत्रफलवाला तालाब था। उस जंगल में न कोई पक्षी था, न कोई पशु ही, तालाब के पास एक आश्रम था।

अगस्त्य एक दिन उस आश्रम में गया। एक दिन वहाँ बिताकर, प्रातःकाल तालाब पास गया। उसके किनारे उसको एक बड़ा मोटा शव दिखाई दिया। वह बिल्कुल न बिगड़ा था। अगस्त्य सोच ही रहा था कि वह किस प्रकार का शव था कि एक विमान वहाँ आकाश से उतरा। वह एक दिव्य विमान था। उसमें एक दिव्य पुरुष था, उसकी कई अप्सरायें सेवा शुश्रूषा कर रही थीं। कुछ गाना गा रही थीं और कुछ नृत्य कर रही थीं।

कुछ देर बाद, वह दिव्य पुरुष विमान से उतरा। जलाशय के किनारे पड़े शव को खाकर, तालाब के पानी में मुँह हाथ धोकर, फिर विमान पर सवार होने के लिए गया। "आप कौन हैं? क्यों इस प्रकार निकृष्ट भोजन कर रहे हैं? क्या कारण है? दीन से दीन लोग भी इस प्रकार का भोजन नहीं करते हैं।"

उस दिव्य पुरुष ने अगस्त्य को अपने पूर्व जन्म की कथा सुनाई।

वह विदर्भ के राजा सुदेव का लड़का था, उसका नाम श्वेत था। सुदेव की दो

पत्नियाँ थीं। दोनों के दो दो लड़के थे। उनमें से बड़े का नाम श्वेत था। छोटे का नाम सुरथ था। श्वेत ने अपने पिता के बाद, बहुत दिन तक राज्य किया। आखिर वह सुरथ को गद्दी सौंपकर तपस्या करने चला गया। बड़ी तपस्या के बाद, वह अपना देह छोड़कर, ब्रह्मलोक गया। पर ब्रह्मलोक में भी उसकी भूख न मिटी। यह देख विस्मित हो, वह ब्रह्मा के पास गया और उनसे पूछा कि उसने कौन-सा पाप किया था कि ब्रह्मलोक में भी भूख और प्यास के कारण उसे ऐसा होता जा रहा था।

इस पर ब्रह्मा ने कहा—"बिना जन्तुओं के जंगल में, तुम्हें भोजन में सन्तोष न मिलेगा। यही नहीं, तुम तपस्या में इतने लगे रहे कि तुमने अतिथियों को कभी भोजन न दिया। इसलिए ही तुम्हें भूख और प्यास नहीं छोड़ रहे हैं। जंगल में पड़े इस शव को खाकर अपनी भूख मिटाते रहो। कुछ दिन बाद वहाँ अगस्त्य आयेगा और अपनी महिमा से, तुम्हारी भूख और प्यास को पूरी तरह मिटा देगा।"

इस दिव्य पुरुष ने यह जानते ही कि उससे बात करनेवाला, अगस्त्य ही था, कहा—"स्वामी, मुझ पर कृपा करो। मेरा यह कष्ट हटाओ। इसके प्रत्युपकार में मैं तुम्हें यह आभूषण देता हूँ। यह हर रोज सोना, धन, वस्त्र, आहार, आभूषण देता रहेगा।"

अगस्त्य ने आभूषण स्वीकार किया और शव अदृश्य हो गया। यह देख, सन्तुष्ट होकर दिव्य पुरुष स्वर्ग चला गया।

राम ने यह कथा सुनकर अगस्त्य से कहा—"स्वामी! श्वेत ने जिस वन में तपस्या की थी, उसमें पशु, पक्षी वगैरह क्यों न थे?"

तब अगस्त्य ने यह कथा सुनाई ।

कृत युग में, मनु महाराज अपने लड़के इक्ष्वाकु को गद्दी सौंपकर, उसे राजनीति का उपदेश देकर, स्वयं ब्रह्मलोक चला गया । इक्ष्वाकु के सौ लड़के हुए । उनमें अन्त के लड़के का नाम दण्ड था । वह बुद्धिमान था । उस दण्ड को इक्ष्वाकु ने विन्ध्य के बीच प्रान्त का शासन भार दिया । दण्ड ने वहाँ, मधुमन्त नाम का सुन्दर नगर बनवाया और शुक्राचार्य को गुरु बनाकर, वह राज्य करने लगा ।

शुक्राचार्य की अरजा नाम की सुन्दर लड़की थी । एक दिन दण्ड वन में अकेला घूम रहा था । उसने अरजा को वहाँ देखा और उसने उसको चाहा । अरजा ने बताया कि वह शुक्राचार्य की लड़की थी । अगर उसने इधर उधर के काम किये, तो शुक्राचार्य उसको शाप दे देगा । फिर भी दण्ड ने उसकी बात न सुनी और उसने उसके साथ बलात्कार किया ।

जब वह मधुमन्त वापिस चला गया, तो शुक्र को उसके दुर्व्यवहार के बारे में मालूम हुआ । शुक्र ने शाप दिया कि मधुमन्त के चारों ओर सौ योजन तक सात रोज धूल की वर्षा हो और सब कुछ नष्ट हो जाये । उस शाप के बारे में सुनते ही, वहाँ रहनेवाले लोग, वह जगह छोड़कर कहीं और भाग गये ।

शुक्र के शाप के अनुसार उस प्रान्त में एक सप्ताह तक, धूल की वर्षा होती रही और वह नष्ट हो गया ।

ये कथायें सुनते राम कुछ समय तक अगस्त्य के आश्रम में रहे, फिर उनसे विदा लेकर, अयोध्या वापिस चले आये ।

अरण्य पुराण

सिवनी के पहाड़ों में एक गुफा है। उसमें एक भेड़िया अपने परिवार के साथ रह रहा था। उसकी पत्नी भी और चार छोटे बच्चे।

शाम के सात बज गये थे। चन्द्रमा गुफा में झांककर देख रहा था। भेड़िया पैर फैलाकर अंगड़ाई लेता उठा। शिकार के लिए गया। भेड़िया पहाड़ से उतरकर जाने की सोच रहा था कि गुफा के द्वार पर छाया दिखाई दी। "आपका शुभ हो, भेड़िया महाराज! बच्चों के बड़े बड़े दान्त आवें। धर्म की वृद्धि हो।" लोमड़ी ने बड़ी विनयपूर्वक कहा।

भेड़िया को लोमड़ी से बड़ी चिढ़ थी। वह इधर उधर घूम घाम कर चुगली किया करती थी। जूठा खाती थी। यहाँ तक कि चीथड़े भी न छोड़ती। भेड़िया, लोमड़ी से कुछ कुछ डरता भी था, चूँकि मौके बे मौके वह पागल हो जाता था। पागल लोमड़ी से तो शेर भी डरता था। चूँकि पागल लोमड़ी के काटने से जो मौत होती है, वह बहुत भयंकर होती है।

"अन्दर आकर देख लो। कुछ भी खाने को नहीं है।" भेड़िये ने लोमड़ी से कहा।

"शायद आपके लिए न हो, पर मुझ जैसे के लिए जितना चाहिए, एक सूखी हड्डी काफ़ी है।" यह कहकर लोमड़ी गुफा में हड्डी पर लगे मांस को खरोंच खरोंचकर खाने लगी — "अरे, कितना बढ़िया भोजन है। कितने बढ़िया बच्चे हैं। बड़ी बड़ी आंखें हैं। हां, सुनते हैं...... शेरखान...... अरे बालक, हमारे जंगल में

५५. नेपोलियन की समाधि

वाटर्लू के युद्ध में पराजित होने के बाद, नेपोलियन को सेंट हेलेना में कैद किया गया और उसकी वहीं मृत्यु हो गई। १८४०. में उसके भौतिक शरीर को पेरिस में इस समाधि में रखा गया।

मैं धुन का मतवाला हूँ !

Photo by

मैं पेट पालनेवाला हूं !!

AWARDS!
WE ARE THE BEST
ONLY
OUR BEST